सामाजिक एकता और समरसता भारत की पहचान

शशि कुमार सैनी
रुड़की

सामाजिक एकता और समरसता, व्यवहार की बात है, सामाजिक व्यवस्था में ''समरसता'' एक श्रेष्ठ तत्व है। भारतीय संविधान में इसे प्राथमिकता दी गयी है। और इस तत्व के शब्द का अर्थ समझाया गया है कि हम सभी नागरिकों को समानता का अधिकार प्राप्त है। सामाजिक एकता और समरसता आज के समाज की सर्वोपरि आवश्यकता है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा था कि ''बंधुता यही स्वतन्त्रता तथा सामाजिक समरसता का आश्वासन है।'' डॉ. अम्बेडकर का धर्म पर गहरा विश्वास था, उनकी मान्यता थी कि धर्म के कारण ही स्वतन्त्रता, समता, बंधुता और न्याय की प्रतिस्थापना होगी तथा धर्म ही व्यक्ति को समाज की सामाजिक एवं नैतिक शिक्षा दे सकता है।

समरसता को लेकर ही स्वामी विवेकानन्द जी के चिंतन में भगवान बुद्ध के उपदेश का आधार मिलता है। उनका स्पष्ट मानना था कि समरसता के सिद्धान्त को हमने स्वीकार तो कर लिया है, विचार और बुद्धि के स्तर पर समाज ने मान्यता भी दे दी है। परन्तु इसे व्यवहार में परिवर्तित करने में हम असफल ही रहे है। समरसता के इस तत्व को सिद्ध और साध्य करने हेतु समरसता के व्यवहारिक तत्व को प्रचलित करना भी जरूरी है।

भारतवर्ष मे समय–समय पर अनेक राष्ट्र महापुरूषों ने जन्म लिया है। सम्पूर्ण समाज की स्थिति को सुधारने में राजाराम मोहन राय, डॉ. बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर जैसे राष्ट्र पुरूषों का यही प्रयास रहा है कि अभिजन वर्ग, बहुजन वर्ग, वंचित वर्ग, पिछड़ा वर्ग, घुंमतू समाज, घुमंतु सुदृढ़ समाज व्यवस्था की अपेक्षा दुर्बल वर्ग के व्यक्तियों पर ज्यादा ध्यान दिया जाये।

भारतवर्ष में संतों की एक लम्बी परम्परा रही है कि समरसता का भाव समय–समय पर लोगों के सम्मुख लाना जरूरी है। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा ज्योतिबा फुले, राजर्षि साहूजी महाराज, नारायण गुरू आदि संतो के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। स्वामी विवेकानन्द जी ने बहुजन समाज की उन्नति के लिए दो बातों की आवश्यकताओं पर विशेष जोर दिया है। जिसमें प्रथम शिक्षा की और दूसरी राष्ट्रीय सेवा की है। दूसरी तरफ सामाजिक समरसता के ही प्रतीक संत कवि तुलसीदास जी ने समाज में सामाजिक समरसता एवं धार्मिक सद्भाव को बनाये रखने के लिए रामचरित मानस जैसे ग्रंथ की रचना की थी। उनकी मान्यता थी कि प्रीति एवं प्रेम हवा में नहीं होते, उन्होंने सगुण भक्ति पर विशेष बल दिया था। सामाजिक समरसता के लिए उन्होंने अपने साहित्य में निषाद, केवट, शबरी जैसे व्यक्तियों को श्रीराम का पात्र बनाया था। उनका मानना था कि ईश्वर के सामने सभी बराबर हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी का मानना था कि सत्ता में रहने पर जनसेवा के कार्य सदा स्मरण रहने चाहिए।

भारत में जब–जब सामाजिक सदभाव डगमगाया है, तब–तब संतों ने ही सामाजिक समरसता सद्भाव की भावना स्थापित की है। सामाजिक समरसता भारत का मूल स्वर है। सतयुग से लेकर कलियुग तक ऋषि–मुनियों ने अपनी आध्यात्मिक परम्पराओं का निर्वहन कर सामाजिक समरसता को मुखरित किया है।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति सदैव **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** को मानने वाली संस्कृति रही है। समरसता ही समाज एवं देश को एकजुट करने, पारम्परिक भेदभाव को समाप्त करने का एक बड़ा सशक्त माध्यम है। सभी समाजों को मिलाकर सभी जातियों के लिए एक शमशान, एक मंदिर, एक कुंआ निर्मित कर समाज को परस्पर मजबूत बनाना है। पर यह कार्य किसी एक व्यक्ति अथवा संस्था का नहीं हो सकता। इसके लिए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है। इस बुराई का खात्मा जागरूक व्यक्तियों के द्वारा ही किया जा सकता है। तभी समाज में वास्तविक समरसता का भाव उत्पन्न हो सकता है। लोगों को जागरूक करने के लिए उनमें प्रेम एवं अपनेपन की भावना के भाव

को जगाये जाने की आवश्यकता है। कुंठित मनों में विषमता की कुंठित भावनाओं को दूर करने की आवश्यकता है। तभी लोग जातिगत भेदभावों से ऊपर उठकर राष्ट्र की उन्नति में अपना सहयोग दे सकेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतवर्ष फिर एक बार विश्व गुरू होगा। पर यह कार्य केवल बातों से नहीं, प्रयासों से ही सम्भव हो सकेगा। इसके साथ ही सामाजिक एकता राष्ट्र को सशक्त और संगठित बनाती है। सामाजिक एकता राष्ट्र की वह भावना है जो देश के विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, जाति, वेशभूषा, सभ्यता एवं संस्कृति के लोगों को एक सूत्र में पिरोकर रखती है। भारतवर्ष, राष्ट्रीय एकता की मिशाल है। यहां अनेकों जातियों, सम्प्रदायों के लोग रहन–सहन, खान–पान तथा वेशभूषा भिन्न–भिन्न होने पर भी एक साथ निवास करते हैं। जब तक किसी राष्ट्र की एकता सशक्त है। तब तक वह राष्ट्र भी सशक्त है। परन्तु जब–जब राष्ट्रीय एकता खंडित हुई है, तब–तब राष्ट्र को अनेक कठिनाइयों से जूझना पड़ा है, और बाहरी शक्तियों ने इसका लाभ उठाया है। देश में व्याप्त साम्प्रदायिकता, भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, राष्ट्रीय एकता के अवरोधक हैं। ये तत्व राष्ट्रीय एकता की कड़ी को कमजोर बनाते हैं। हमारे देश की भौगोलिक भिन्नता, जिसमें हजारों जातियों, सम्प्रदायों का समावेश है, यह राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाती है।

राष्ट्रीय एवं सामाजिक एकता को बनाये रखने के लिए राष्ट्रीय एकता के तत्वों, जैसेः हमारी राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीय चिन्हों, राष्ट्रीय पर्वों, सामाजिक समानता एवं उत्कृष्टता पर विशेष बल दिये जाने की आवश्यकता है। भारत में समाजिक एकता ही समरसता की पहचान है। ऋग्वेद में कहा गया है कि हे मनुष्यों! तुम सबके विचार एक जैसे हो, मन एक समान हो, मिलकर चलो, परस्पर मिलकर बात करो। अगर विरोधी दिशा में चलोगे तो समाज को हानि होनी निश्चित है। जब हमारे संकल्प समान होंगे, हृदय परस्पर मिले हुए होंगे, हम सबको मित्र की दृष्टि से देखेंगे तो समाज सुगठित होगा। तुलसीदास जी ने कहा है कि

जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपत्ति निधाना।।

परस्पर मिलकर विचार करो। विचारों से वाणी शुद्ध बनेगी। वाणी से कार्यों में एकता आयेगी। विद्वानजनों का यह स्वभाव रहा है कि हम सब मिलकर साथ चले। साथ संवाद करें, और मिलकर विचार करें।

अथर्ववेद में कहा गया है ''सर्व आशा मम् मित्र भवन्तु'' हम सब आपस में मित्र हैं। जिस तरफ भी मैं देखूं हर एक को अपना मित्र समझूं। यह मंत्र मानव को प्ररेणा देता है कि हम मन और मस्तिष्क से एक साथ हों, ताकि एकता बनी रहे। जब तक हम समाज में एकता की भावना रखेगें, तो हमारा समाज स्वस्थ और प्रगतिशील रहेगा। वेदों के उपदेश का यही सार हैः भाईचारा, दया, करूणा, सत्यनिष्ठा, साधुता को बढ़ाना।

अन्त में मैं यही कहना चाहूंगा कि भारत एक महान स्वतंत्र प्रगतिशील राष्ट्र है। राष्ट्रीय और समाजिक एकता बनाये रखने के लिए ये जरूरी है कि हम अपनी तुच्छ मानसिकता को त्यागकर कार्य करें। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम चाहे जिस जाति या क्षेत्र या समुदाय या प्रान्त से हैं पर इन सबसे पहले हम एक भारतीय हैं, और भारतीयता ही हमारी वास्तविक पहचान है। जिस पर हम सभी भारतवासी गर्व कर सकते हैं। सामाजिक व्यवस्थाओं में ऐतिहासिक दृष्टि से अगर देखें तो मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम सामाजिक समरसता के प्रतीक हैं। जिन्होंने एक साधारण मनुष्य की तरह जीवन निर्वहन करते हुए सामाजिक एवं राजनैतिक मर्यादाओं का पालन जिस तरह से किया, वैसा विश्व के साहित्य में कहीं भी देखने को नहीं मिलता है। भगवान राम ने वनवास के दौरान, विभिन्न जाति एवं वर्गों के मध्य परस्पर निषादराज के यहां रूककर तथा शबरी के झूठे बेर खाकर समाज में प्रेम एवं सामाजिक समरसता का परिचय दिया था। यही भारत की सामाजिक एकता और समरसता की पहचान है।